50 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद या वर्मीकल्चर में मिलाकर अंतिम जुताई से पूर्व खेत में डालना चाहिए।

सरसों की बुवाई :

सरसों की बुवाई के लियें उपयुक्तातापमान 25 से 26 सैल्सियस तक माना जाता है। बारानी सरसों की बुवाई 5 सितन्बर से 5 अक्टुबंर तक कर देनी चाहिए। सिंचित क्षैत्रो में अक्टूबर के अन्त तक बुवाई की जानी चाहिए सरसों की बुवाई कतारो में करनी चाहिए। कतार से कतार की दूरी 30 सें. मी. तथा पौधों से पौधे की दूरी 10 सें. मी. रखनी चाहिए। सिंचित क्षैत्र में बीज की बुवाई 5 से. मी. गहराई तक रखनी चाहिए। असिचित क्षैत्र में गहराई नमी के अनुसार रखनी चाहिए। बुवाई के लिए शुष्क क्षैत्र में 4 से 5 कि.ग्रा तथा सिंचित क्षैत्र में 2.5 कि. ग्रा बीज प्रति हैक्टर पर्याप्त रहता है। बुवाई से पहले बीज को 2.5 ग्राम मैन्कोजेब प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करना चाहिए।

खाद व उर्वरक प्रबन्धन :

सिंचित फसल के लिए 8से 10 टन सड़ी हुई गोबर की खाद प्रति हेक्टर की दर से बुवाई के उसे 4 सप्ताह पूर्व खेत मे डालकर खेत की तैयारी करनी चाहिए एवं बारानी क्षेत्र में वर्षा से पूर्व 4 से 5 टन सडी हुई खाद प्रति हैक्टर खेत में डाल देना चाहिए।

सिंचाई :

सरसों की फसल में सही समय पर सिंचाई देने पर पैदावार में उच्चतम पैदावार होती है। यदि वर्षा अधिक होती है। तो फसल को सिंचाई की आवश्यकता नही होती है। परन्तु यदि वर्षा समय पर न होतो 2 सिंचाई आवश्यक है प्रथम सिंचाई बुवाई के 30 से 40 दिन बाद एवं द्वितीय सिंचाई 70 से 80 दिन की अवस्था में करनी चाहिए यदि जल की कमी हो तो एक सिचाई 40 से 50 दिन अवधि के समय करनी चाहिए।

निराई गुडाई एवं खरपतवार नियंत्रण :

पौधों की संख्या अधिक होतो बुवाई के 20 से 25 दिन बाद निराई व् गुड़ाई के साथ छटाई कर पौधे निकालने चाहिए तथा पाँधों के बीच 8 से 10 सेन्टी मीटर की दूर रखनी चाहिए। सिचाई के बाद निराई गुडाई करने से खरपतवार की उपज नहीं होगी। प्याजी की रोकथाम के लिए फ्लोक्लोरलिन एक लीटर सक्रिय तत्व प्रति हैक्टर भूमि में मिलावें।

फसल की कटाई :

सरसों की फसल 120 से 150 दिन में पककर तैयार हो जाती है इस फसल में उचित समय पर कटाई करना अत्यन्त आवश्यकता होता है क्योकि यदि समय पर कटाई नहीं की जाती है। तो फलियाँ चटकने लगती है। एवं उपज में 5 से 10 प्रतिशत की कमी आ जाती है। जैसे ही पौधे की पतियों एवं फलियों का रंग पीला पड़ने लगे कटाई कर लेनी चाहिए। कटाई के समय इस बात का विशेष ध्यान रखे की सत्यानाशी खरपतवार का बीज, फल के साथ न मिलने पाये नहीं तों इस फसल से प्राप्त तेल दूषित होकर मनुष्य में ड्रॉप्सी नामक बीमारी फैलाता है ।

उपज :

सरसों की फसल में उन्नत शस्य क्रियाए अपनाकर 20.25 क्विन्टल प्रति हैक्टर प्राप्त की जा सकती है

भण्डारण :

भण्डारण करते समय दानों में नमी का विशेष ध्यान रखना चाहिए सरसों में भण्डारण के समय नमी 8-10% होनी चाहिये भण्डारण करते समय साफ सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिये।

Mustard सरसो

वैज्ञानिक खेती

ग्रामीण विकास विज्ञान समिति (ग्राविस)

3/437, 458, मिल्कमैन कॉलोनी, पाल रोड़, जोधपुर - 342008 (राज.)
फोन नं. 0291-2785116, 2785317 फैक्स : 0291-2785116
ईमेल : email@gravis.org.in वैबसाईट : www.gravis.org.in
किसान कॉल सेन्टर 1800 180 1551

परियोजना, मुख्यधारा के कृषि जैव विविधता संरक्षण और कृषि क्षेत्र में उपयोग परिस्थिति की तंत्र सेवाओं को सुनिश्चित करने और कमजोरता को कम करने के लिए

इस परियोजना का उद्देश्य भारत के 4 कृषि-क्षेत्रों में किसान समुदायों की आजीविका में सुधार और पहुंच साझा करने के लिए कृषि और स्थायी उत्पादन में लचीलापन के लिए कृषि जैवविविधता के संरक्षण और उपयोग को मुख्यधारा में लाना है। यहां कई कृषि प्रदर्शन समुदाय आधारित भागीदारी दृष्टिकोणों के माध्यम से किये जाऐंगे जो मौजुदा फसल विविधता के रख रखाव और कम से कम 14 फसलों की उपयुक्त नई सामग्रियों की शुरुआत और तैनाती का समर्थन करते हैं। प्रस्तावित विभिन्न दृष्टिकोण में जागरुकता अभियान, बीज, मेले, विविधता मंच, बीज आपूर्ति प्रणालियों को मजबुत करना और सामुदायिक जीन बैंक की स्थापना, और लाभ देने में सक्षम बनाती है। यह परियोजना किसानों को विविध समृद्ध समाधानों को अपनाने और लाभ देने में सक्षम बनाती हैं। यह परियोजना किसानों और समुदायों के साथ सीधे काम करेगी, ताकि वे जलवायु में बदलाव के कारण आने वाली चुनौतियों का सामना कर सकें। इसमें सहभागी फसल मूल्यांकन और उपयुक्त फसल विविधता की पहचान और वैज्ञानिक रुप से ध्वनि प्रमाण के आधार पर विभिन्न प्रकार के अनुकूलन, किसानों और समुदायों द्वारा इसकी पुष्टि शामिल है, जिसमें पुरुषों और महिलाओं के स्वयं सहायता समूह शामिल हैं। मुल्य संवर्धन के माध्यम से आय और अन्य आजीविका सुधार कार्यो और स्थानीय फसलों और जमीनों से अद्वितीय उत्पाद विकास और प्रभावी बाजार लिंक के माध्यम से उनका व्यावसायिकरण भी मुख्यधारा का समर्थन करेगा। परियोजना कृषि जैवविविधता के संरक्षण और उपयोग के माध्यम से क्षमता निर्माण और महिलाओं के सशक्तीकरण पर विशेष जोर देती है।

सरसों एवं राई की गिनती भारत की प्रमुख तीन तिलहनी फसलों (सोयाबीन, मूंगफली एवं सरसो) में होती है। राजस्थान में प्रमुख रूप से भरतपुर सवाई माधोपुर, अलवर करौली, कोटा, जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर आदि जिलो में सरसों की खेती की जाती है। सरसों में कम लागत लगाकर अधिक आय प्राप्त की जा सकती है। इसके हरे पौधों का प्रयोग पशुओं के हरे चारे के रूप में लिया जा सकता है। साथ ही पशु आहार के रूप में बीज, तेल, एंव खली को काम में ले सकतें हैं क्योकि इनका प्रभाव शीतल होता है जिससे कारण कई रोगो की रोकथाम में सहायक होते है इसकी खली में लगभग 4 से 9 % नाइट्रोजन 2.5 % फास्फोरस एवं 1.5 % पोटाश होता है। अत: कई देशों में इसका उपयोग खाद की तरह किया जाता है किन्तु हमारे देश में यह केवल पशुओ को खली के रूप में दिया जाता है। इसके सूखे तनों का उपयोग ईंधन के रूप में लिया जाता है। सरसों के बीज में तेल की मात्रा 30 से 48 % तक पायी जाती है। सरसों राजस्थान की प्रमुख तिलहनी फसलों में एक है जिससे तेल प्राप्त होता है। सरसों का तेल, खाना बनाने, मालिश करने, साबुन व् ग्रीस बनाने तथा फल एंव सब्जियों के परीरंक्षण में बहुताय रूप से उपयोग किया जाता है।

जलवायु तथा मृदा :

भारत में सरसों की खेती शरद ऋतु में की जाती है। इस फसल को 18 से 250 सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती है। सरसों की फसल के लिए फूल आते समय वर्षा, अधिक आर्द्रता एवं वायुमण्डल में बादल छायें रहना अच्छा नही रहता है। अगर इस प्रकार का मौसम होता हैं तो फसल पर माहू या चौपा के आने का अधिक प्रकोप हो जाता हैं। सरसों की खेती रेतीली से लेकर भारी मटियार मृदाओ में की जा सकती है। लेकिन बलुई दोमट मृदा सर्वाधिक उपयुक्तरहती है। यह फसल हल्की क्षारीयता को सहन कर सकती है। लेकिन इसके लिए अम्लीय मृदा उपयुक्त नहीं होती है।

सरसों की उन्नत किस्में :

1. एन.आर.सी.एच.बी. 101

- पौधे की ऊंचाई: 170-200 सेमी
- औसत बीज की उपज: 13.82-14.91 किग्रा क्विन्टल प्रति हैक्टर
- तेल सामग्री: 34.6-42.1
- बीज का आकार: 3.6-6.2 ग्राम
- परिपक्वता की अवधि: 105-135 दिन

टिप्पणी: देर से बोए गए सिंचित और वर्षा की स्थिति के लिए उपयुक्त है

2. एन.आर.सी.डी.आर. 02 :

- समय पर सिंचित स्थितियों की बुवाई के लिए उपयुक्त है।
- पौधे की ऊंचाई: 165-212 सेमी
- औसत बीज की उपज: 19.51-26.26 किग्रा क्विन्टल प्रति हैक्टर
- तेल सामग्री: 36.5-42.5%
- बीज का आकार: 3.5-5.6 ग्राम
- परिपक्वता की अवधि: 131-156 दिन

टिप्पणी: बोने के समय लवणता और उच्च तापमान के लिए सहिष्णु है। सफेद फफूँदी, अल्टरनेरिया ब्लाइट, स्क्लेरोटिनिया स्टेम रोट और एफिड्स।

3. डी.आर. एम.आर. (गिरिराज) :

- समय पर सिंचित स्थितियों की बुवाई के लिए उपयुक्त है।
- पौधे की ऊंचाई: 180-210 सेमी
- औसत बीज की उपज: 22.25-27.50 किग्रा हे
- तेल सामग्री: 39-42.6
- बीज का आकार: 5.6 ग्राम
- परिपक्वता की अवधि: 137-153 दिन

टिप्पणी: बोल्ड बीज, उच्च तेल सामग्री और उच्च उपज किस्म।

पीली सरसों :

इस किस्म का नाम पीला इसलिए रखा गया क्योंकि इसके दाने पीले कलर के होते है तथा इसका पौधा कम वृद्धि व मोटी फलियों वाला होता है। पीली सरसों राजस्थान के अलावा कई राज्यों में उगाई जाती है उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, गुजरात एवं महाराष्ट्र। पीली सरसों में बहुत गुणकारी तत्व पाये जाते है जो मनुष्य की कई बीमारियों के काम में आते है सरसों के पौधे के बीज में कैल्शियम, मैग्निशियम, फास्फोरस और पोटेशियम जैसे खनिज होते है। इसके साथ ये फोलेट और विटामिन ए का भी एक अच्छा स्त्रोत है। मांसपेशियों की ऐंठन से छुटकारा, शरीर के दर्द को दूर करता है, अस्थमा अटैक रोकता है, सांस की बदबू से छुटकारा, ये किस्में लगभग 120 से 125 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इनमें 42 से 45 फीसदी तक तेल की मात्रा पाई जाती है।

खेत की तैयारी :

सरसों के लिए भुरकुरी मृदा की आवश्यकता होती है। इसके लिए खरीफ की कटाई के बाद एक गहरी जुताई करनी चाहिए तथा इसके बाद तीन चार बार देशी हल से जुताई करना अधिक लाभप्रद होता है। जुताई के बाद पाटा लगाकर खेत को तैयार करना चाहिए असिंचित क्षैत्रों में वर्षा से पहले जुताई करके खरीफ मौसम में खेत को खुला छोडना चाहिए जिससे वर्षा का पानी का संरक्षण हो सके। जिसके बाद हल्की जुताई करके खेत तैयार करना चाहिए। यदि खेत में दीमक एवं अन्य कीटो का प्रकोप अधिक हो तो, नियंत्रण हेतु अन्तिम जुताई के समय क्यूनालफॉस 4.5% चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हेक्टयर की दर से देना चाहिए। साथ ही, उत्पादन बढ़ाने की दृष्टि 2 से 3 किलोग्राम एजोटोबेक्टा एवं पी.ए.बी कल्चर की तथा